स्नातक द्वितीय खण्ड
मैथिली प्रतिष्ठा - तृतीय पत्र

डॉ० अरुण कुमार ठाकुर
मैथिली विभाग
जे० एन० कॉलेज मधुबनी

'आदान-प्रदान'

आदान-प्रदान शीर्षक निबन्ध मिथिलाभाषा साहित्यक विख्यात, कवीन्द्र पण्डित श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क गम्भीर मनन चिन्तनक प्रतिफल थिक। प्रस्तुत निबन्धमे निबन्धकर्ता जनजीवनमे आदान-प्रदानक महत्तापर विद्वतापूर्ण विचार व्यक्त कयलन्हि अछि। सृष्टिक आरंभहिसँ जनजीवनक मूलाधार आदान-प्रदान रहल अछि।

आदान-प्रदान एकहि प्रकृति प्रत्ययसँ निर्मित शब्द-युग्म थिक। केवल उपसर्ग मात्रक भेद अछि। ई दुनू शब्द सहचर ओ एक-दोसराक पूरक थिक। लेब नहि तँ देब की? देब नहि तँ लेबाक अधिकार कोना? इएह कारण अछि जे प्रातःस्मरणीय गोस्वामी तुलसी दास लिखलन्हि अछि — देब लेब मन सोच न धरहू। वस्तुतः संसारक समस्त व्यापार निःशंक भावें लेन-देन पर सदा-सर्वदासँ चलि आबि रहल अछि। एकर अभावमे कोनो कार्य व्यापार संभव नहि अछि। राजा, प्रजा, नेता, जनता, शिक्षक, शिष्य, पिता, पुत्र, पुत्री, श्रम, क्रेता-विक्रेता, वक्ता-श्रोता आदि समस्त जन समाजमे लेबा-देबाक प्रक्रिया निरन्तर चलैत रहैत अछि। प्रकृति पुरुषक कुड़ात्मक हाट-बाजारमे चाहे वस्तुवादी लेन-देन हो वा भावात्मक आदान-प्रदान हो, सर्वत्र आदान-प्रदानक क्रिया चलैत रहैत अछि। सूर्य जे महान छथि सेहो पृथ्वीसँ रस ग्रहण करैत छथि। जल सोखैत छथि आ बदलामे सहस्त्रगुणा अधिक वर्षासँ धात्री-धरित्रीकेँ जलसँ प्लावित करैत छथि। चन्द्रमा सूर्यसँ ताप ग्रहण कऽ विश्वकेँ शीतलता प्रदान करैत छथि। मधुमक्षिका परागक संग्रह कऽ मधुक वितरण करैत अछि। पवनक वन-उपवनक लतागुल्ममे प्रस्फुटित प्रसूनक रसग्रहण कऽ ओकर सुरभिकेँ दिग-दिगन्तमे विसरित करैत छथि। गाछ-वृक्ष भूमिसँ रस ग्रहण कऽ लोककेँ फल-फूल प्रदान कऽ सत्कृत करैत अछि। तात्पर्य ई जे आदान-प्रदानक प्रक्रिया सर्वत्र चलि रहल अछि। सृष्टिक प्रक्रिया पर्यन्तमे शिशु पितासँ जन्म ग्रहण करैत अछि। पोषणपर्यन्त अछितेँ ओहो पोषणक दायित्व ग्रहण करैछ। एकटा गीत-कथा प्रचलित

— एक गोट गृहस्थ भोजनसँ पूर्व अपन धर्मपत्नीसँ कहल-
करथि जे ग्रहण चुकाओल वा नहि ? स्वीकारक उत्तर प्राप्त भेला-
पर पुनः पुछैत छलथिन जे ग्रहण लगाओल वा नहि ? पुनः भव्यन्
स्वीकारक उत्तर भेटनि तखन ओ भोजन ग्रहण करथि। एक अनजान
एहि उक्तिकेँ कतोक दिन सुनलापर चकित होइत पुछलथिन
जे की बात छैक जे अहाँ प्रतिदिन ग्रहण सधबैत छी आ ग्रहण
लगबैत छी। कि अहाँक केहन महाजनि अछि जे अहाँ भोजन करबासँ
पहिने भेल ताकइ ? गृहस्थ उत्तर देलथिन जे पहिने हम वृद्ध
माता-पिताकेँ भोजन करबैत छी जे एक प्रकारेँ ग्रहण सधारब
थिक। तत्पश्चात धीया-पूताकेँ खोआबैत छी जे हमर ग्रहण
लगाएब थिक। अपन समाज मे सदा-सर्वदासँ आदान-प्रदानक
परम्परा रहल अछि। भारतीय समाजवाद एहि मूलधारणाक
पर आधारित अछि। पञ्चमी द्विजक तीनगोट कर्म आदानसँ
तीन गोट कर्म प्रदानक कहल गेल अछि। अध्ययन संग-संग
अध्यापन, दानक संग-संग प्रतिग्रहणक, भजनक संग संग
भोजन, विष तँ अमृत, अमृत, अधिकार तँ कर्त्तव्य, श्रमिक श्रमक
बदलामे भरणक अधिकारी। लेन-देनक संग-संग व्यवहारमे
केओ ऋणी आ केओ महाजन बनैछ। जीवनमे ककरो उत्कर्ष
आ ककरो अपकर्ष प्राप्त होइछ। ककरो लाभ तँ ककरो हानि
देखबामे अबैछ। जकरा आदान सँ प्रदान, भोगसँ योग अधिक,
संग्रहसँ त्याग अधिक से ततेक यशस्वी आ धन्यवादक पात्र
मानल जाइछ। राजस्वसँ अधिक राज्य व्यवस्थापर ध्यान-
देनिहार राज्य, व्यक्ति सँ अधिक समाजकेँ मान्यता प्रदानकर्निहार
धन सँ अधिक स्वतः स्फूर्ति प्राप्त व्यवस्था-संस्था तथा आदान
सँ अधिक प्रदानकेँ महत्त्व देनिहार व्यक्ति स्वतः महान बनि जाइछ।
राम-कृष्ण आदि महापुरुष जतेक समाज सँ ग्रहण कएलनि ताहिसँ
अधिक समाजकेँ प्रदान कएलनि आ तेँ ओ सभ लोकनि अनुकरणीय
आ चिर-स्मरणीय छथि। अतः समाजमे जे व्यक्ति जतेक अधिक महान
आदान सँ प्रदानक आग्रही होइत छथि से ततेक अधिक मान्य आ वदान्य
होइत छथि।

एहि थिक आलोच्य निबन्धक विषय-वस्तु जकर अनुशीलन-परिशीलन,
संश्लेषण-विश्लेषण सँ स्पष्ट अछि जे जनजीवनक मान्यतामे आदान-
प्रदान ओ केन्द्रबिन्दु थिक
सँ अधिक प्रदानक महत्त्व अछि। आदान-प्रदान ओ केन्द्रबिन्दु थिक

— एक गोट गृहस्थ भोजनसँ पूर्व अपन धर्मपत्नीसँ कहल
कथि मे ग्रहण चुकाओल वा नहि? स्वीकारक उत्तर प्राप्त भेला
पर पुनः पुछैत छलथिन जे ग्रहण लगाओल वा नहि? पुनः अपन
स्वीकारक उत्तर भेटनि तखन ओ भोजन ग्रहण करथि। एक आगन्तुक
एहि उक्तिकेँ कतेक दिन सुनलापर चकित होइत पुछलथिन
कि ई की बात छैक जे अहाँ प्रतिदिन ग्रहण सधबैत छी आ ग्रहण
लगबैत छी। कि अहाँक कहब महाजनि अछि जे अहाँ भोजन करबासँ
पहिने भेल ताकए? गृहस्थ उत्तर देलथिन जे पहिने हम बूढ़
माता-पिताकेँ भोजन करबैत छी जे एक प्रकारेँ ग्रहण सधाएब
थिक। तत्पश्चात धीया-पूताकेँ खोआबैत छी जे हमर ग्रहण
लगाएब थिक। उपर्युक्त समाज मे सदा-सर्वदासँ आदान-प्रदानक
2 परम्परा रहल अछि। भारतीय समाजवाद एहि मूलधारणाक
पर आधारित अछि। षट्कर्मा द्विजक तीनगोट कर्म आदानसँ
तीन गोट कर्म प्रदानक कहल गेल अछि। अध्ययन संग-संग
अध्यापन, दानक संग-संग प्रतिग्रहणक, यजनक संग-संग
याजन, विष तँ अमृत, अमृत, अधिकार तँ कर्तव्य, श्रमिक श्रमक
बदलामे मरणाक अधिकारी। लेन-देनक संग-संग व्यवहारमे
केओ ग्रहणी आ केओ महाजन बनैछ। जीवनमे ककरो उत्कर्ष
आ ककरो उपकर्ष प्राप्त होइछ। ककरो लाभ तँ ककरो हानि
देखबामे अबैछ। मकरा आदान सँ प्रदान, भोगसँ भोग अधिक,
संग्रहसँ त्याग अधिक से तेहक यशस्वी आ धन्यवादक पात्र
मानल जाइछ। राजस्वसँ अधिक राज्य व्यवस्थापर ध्यान
देनिहार राज्य, व्यक्ति सँ अधिक समाजकेँ मान्यता प्रदानकएनिहार
धन सँ अधिक स्वतः स्फूर्ति प्राप्त व्यवस्था-संस्था तथा आदान
सँ अधिक प्रदानकेँ महत्व देनिहार व्यक्ति स्वतः महान बनि जाइछ।
राम-कृष्ण आदि महापुरुष जतेक समाज सँ ग्रहण कएलनि ताहिसँ
अधिक समाजकेँ प्रदान कएलनि आ तेँ ओ लोकनि अनुकरणीय
आ चिर-स्मरणीय छथि। अतः समाजमे जे व्यक्ति जतेक अधिक मात्रामे
आदान सँ प्रदानक आग्रही होइत छथि से ततेक अधिक मान्य आ वदान्य
होइत छथि।

उपर्युक्त थिक आलोच्य निबन्धक विषय-वस्तु जकर अनुशीलन-परिशीलन,
संश्लेषण-विश्लेषण सँ स्पष्ट अछि जे जनजीवनक मान्यतामे आदान-
सँ अधिक प्रदानक महत्व अछि। आदान-प्रदान ओ केन्द्रबिन्दु थिक

आदान-प्रदान 3.

जकर चतुर्दिक जनजीवन भ्रमणशील अछि। लेन-देन संसारक मूलधर्म थिक। एकर अभावमे संसारक व्यापार संभव नहि अछि। विद्वान लेखक अपन एहि निबन्धमे जे भाव व्यक्त कयलनि अछि से सर्वथा सत्य एवं शाश्वत अछि। देव समाज सँ लऽ कऽ जनसमाज धरि सर्वत्र आदान-प्रदानक प्रक्रिया देखल जाइत अछि। मनुष्य देवी-देवताक उपासनाक पश्चातहि फल प्राप्त करैत अछि। माता-पिता संततिक भरण-पोषण कयलाक पश्चातहि संततिसँ भरण-पोषण प्राप्त करैत अछि। तात्पर्य ई जे जीवनक कोनो क्षेत्र एहन नहि अछि जाहिठाम आदान-प्रदान व्यवहारवान नहि हो?

अस्तु।